International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 336-340

स्ववितपोषित माध्यामिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में राष्ट्रीयता की भावना का अध्ययन

अजय कुमार
शोधार्थी, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास, भारत।

सारांशः
प्रस्तुत अध्ययन विवरणात्मक प्रकार का अनुसंधान है जिसे सर्वेक्षण विधि द्वारा सोनीपत जिले की स्ववितपोषित माध्यामिक विद्यालयों के 200 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श प्रविधि द्वारा किया गया था जो क्षेत्र व लिंग के आधार पर आधे–आधे थे। राष्ट्रीयता की भावना के स्तर के मापन हेतु डा० विनय रनसिंह, डा० ज्योति शिवाल्कर एवं डा० वृंदा जोगलेकर (2011) द्वारा निर्मित "राष्ट्रीय मूल्यों की भावना" का मानकीकृत उपकरण प्रयोग किया गया था। ऑकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, क्रान्तिक अनुपात परीक्षण और सह संबधं को सांख्यिकी विधियों के रूप में प्रयुक्त किया गया था। प्राप्त परिणाम से स्पष्ट है कि स्ववितपोषित माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की राष्ट्रीयता की भावना के स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है और दोनों के स्तर एक समान है।

मूल शब्द : माध्यमिक विद्यालय, भावना, राष्ट्रीयता, न्यादर्श आदि।

प्रस्तावना

प्रत्येक मनुष्य के जीवन में कुछ ऐसी श्रेष्ठ मान्यताएं प्रचलित हो सकती है जिनके पालन से व्यक्ति का व समाज का कल्याण होता है। इन मान्यताओं को ही जीवन मूल्य कहा जाता है। जीवन मूल्य ऐसे नियम होते है, ऐसी धारणाएँ होती है जिनकी उपादेयता एवं जिनकी उपयोगिता के कारण लोग उन्हें अपने जीवन में अपना लेते हैं। विद्वानों ने मूल्यों को शाश्वत मूल्य, राष्ट्रीय मूल्य, धार्मिक मूल्य, सामाजिक मूल्य एवं सांस्कृति मूल्य आदि पाँच श्रेणियों में विभाजित किया है।

भारतीय वाड्.गमय में 'राष्ट्र' शब्द का प्रयोग वैदिक काल से ही होता रहा है। यजुर्वेद के 'राष्ट्र में देहि' और अथर्वेद के 'त्वा राष्ट्र भृत्याय' में राष्ट्र शब्द समाज के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। मानव की सहज सामुदायिक भावना ने समूह को जन्म दिया, जो कालान्तर में राष्ट्र के रूप में स्थापित हुआ। राष्ट्र एक समुच्चय है, और राष्ट्रीयता एक विशिष्ट एक विशिष्ट भावना है। समाज का राष्ट्र से सीधा सम्बंध है। किसी भी सांस्कारिक समाज की विशिष्ट जीवन शैली होती है जो कि राष्ट्र के रूप में दूसरे समाज को या अन्य समाज को प्रभावित करती है। रूढ़ियों एवं विकृत परम्पराओं से जर्जर समाज राष्ट्र को पतन की ओर ले जाता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन के द्वारा माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की राष्ट्रीयता की भावना के स्तर का पता लगाने का प्रयास किया गया है । गौतम, अखिलेश कुमार (2017) ने ''किशोरावस्था और राष्ट्रीयता'' में पाया कि किशोरावस्था में वह अपने परिवार, समाज और राज्य के संबंध में अपनी पहचान को खोज रहा है। किसी भी प्रकार का तार्किक विश्लेषण किशोरावस्था के बेहद प्रारम्भिक चरण में शुरू करता है। वह इस अवधारणा को सीधे तौर पर समझना शुरू नही करता अपितु विभिन्न मूर्त संस्थाओं और अमूर्त भावनाओं के साथ जोड कर देखना शुरू करता है देश का नाम, उसका झण्डा, उसके राष्ट्रीय चिन्ह, विभिन्न राज्य, आर्मी एंव अन्य विशेषता आदि उस तक पहले पँहुचते है।

सजीथा. जे. (2017) ने भूमण्डलीकरण से राष्ट्रीयकरण में पाया कि भूमण्डलीकरण से अलग जब राष्ट्रीयकरण का सवाल आता है तो हमारा सांस्कृतिक संकट शुरू होता है। हम विभाजित व्यक्ति बन जाते हैं । खुद अपने सांस्कृतिक स्रोतों, आस्था के प्रतीकों, अपने आसपास की संवदेनाजन्य ध्वनियों और अपने जनसामान्य से कट जाते हैं । सच्चाई यही है वैश्विक बाजार की पूरी परिकल्पना उस अमीर को लेकर की गई है जो साधन–सम्पन्न है। उसे ही इस बाजार में 'मानव' होने का दर्जा दिया गया है । उसी के अधिकार मानवाधिकार हैं । मानव मूल्य अब गौण हो गए हैं।

धिंगरा, राखी गिरीराज (2016) ने शांति शिक्षा के प्रति विभिन्न महाविद्यालयों के अध्यापकों की जागरूकता और दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन में पाया कि 1. शांति शिक्षा के प्रति विभिन्न महाविद्यालयों के अध्यापकों की जागरूकता में विभाग अनुसार शिक्षाशास्त्र विभाग के अध्यापक शांति शिक्षा के प्रति अधिक जागरूक है। 2. लिंगभेद के अनुसार स्त्री अध्यापक व पुरूष अध्यापकों की जागरूकता में शांति शिक्षा के प्रति सार्थक अंतर होता है। 3. अध्यापन अनुभव के अनुसार अध्यापकों की जागरूकता में शांति शिक्षा के प्रति सार्थक अंतर होता है। 4. शांति शिक्षा के प्रति विभिन्न महाविद्यालयों के अध्यापकों के दृष्टिकोण में विभाग अनुसार शिक्षाशास्त्र विभाग के अध्यापक शांति शिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण है। श्रीवास्तव, संदीप कुमार और गुप्ता, मोनिका (2015) ने रोल ऑफ मीडिया इन नेशनल इंटीग्रशन इन इंडिया में निष्कर्ष निकाला कि – पत्रकारों और मीडिया को प्रतिबद्ध और आत्मनिर्भर होना चाहिए। उन्हें अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों को निर्वाह, निरपवाद रूप से सूक्ष्म व जातीय प्रणाली के विकास को बनाये रखने के लिए करना चाहिए ताकि राजनीतिक क्षेत्र या भू भाग, मानवीय रिश्तों और अन्य क्षेत्रों में आये घर्षण को समाप्त किया जा सके। समाज के हितरक्षक के रूप में वे मानवता और राष्ट्रीय अंखडता के लिए, सामाजिक बुराइयों के उन्मूलन में देश और नागरिकों की सहायता कर सकते है। एको, जीन अदा और ओजोन, जेम्स फॉबे (2014) ने इफेक्टस ऑफ नेशनल इनसिक्योरिटी ऑन इन्टर पर्सनल रिलेशनशिप अमंग थूयस ऑफ बेन्यू स्टेट नाईजिरिया में अपने अध्ययन में पाया कि 1. नाइजिरिया के नागरिकों में सुरक्षा जागरूकता को लेकर संवेदनशीलता पाई

गई। इसके अलावा युवाओं में किसी अन्जान आशंका को लेकर डर पाया गया यहाँ तक कि शाम 6 बजे के बाद मिलने वाले किसी आमंत्रण पर भी ये नहीं जाते। 2.बहुसंख्यक उत्तरदाताओं को प्रेमविवाह पर विश्वास न होकर अन्तर्राज्यीय विवाह में विश्वास करते है। 3. 50% उत्तरदाता सुरक्षा चुनौतियाँ के बावजूद अपने राज्य के अलावा अन्य राज्यों में यात्रा करना पंसद करते है। राष्ट्रीय युवा सेवा वाहिनी के सभी 240 उत्तरदाता सुरक्षा कारणों की वजह से अपनी पंसद के राज्यों में सेवा करना चाहते है। 4. अधिकांश उत्तरदाताओं ने सुरक्षा कारणों के चलते स्कूल (75%) कार्यस्थान (79%) और विवाह 75 के लिए अपने मूल राज्यों को ही चुना। शर्मा, चारू (2014) ने अपने अनुसंधान पत्र ''चिल्ड्रेन अडंरस्टैडिग ऑफ नेशन'' थियोरीटिकल पर्सपैक्टिवस में निष्कर्ष निकाला कि 'राष्ट्र' एक केन्द्रिय और अति महत्वपूर्ण विषय है जब हम सामाजिक विज्ञान एक केन्द्रिय और अतिमहत्वपूर्ण विषय है जब हम सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम को विभिन्न शैक्षिक सीमाओं में रेखांकित करते है। 'राष्ट्र' को एक महत्वपूर्ण विषय–वस्तु के रूप में लिया जाना चाहिए ताकि वो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष स्त्रोतो के द्वारा अपने जीवन में अपने राष्ट्रीयता राष्ट्रीयवाद, राष्ट्रीय प्रवृत्ति, राष्ट्रीय पहचान और राष्ट्रीय नागरिकता भी घोषित किया जाना चाहिए। सेनागुप्ता (2013) ने नेशनेलिटी क्वेश्चन् एडं नेशनल एंटीग्रेशनः रिफ्लैक्सनस ऑन पैराडोक्सिज कन्फ्रन्टींग द इंडियन स्टेट में निष्कर्ष निकाला कि भारत निर्माण में राष्ट्रीय आकांक्षाओं में द्वद्व नहीं होना चाहिए। इसके लिए सभी समावेशियों को चाहिए। कि राष्ट्रीय एकता के लिए बल (दबाव) का सहारा नहीं लेना चाहिए क्योंकि यह कदम उभरते राष्ट्रवादियों को एकता के सूत्र में बांधने की बजाय एक दूसरे का विरोधी बना देगा। चन्द्रा. आर. के. के. मोहनसुदंरम और सिंगरावेलु (2013) ने स्टडी ऑफ नेशनल वेल्यूज अवेयरनेस इन स्कूल्स में निष्कर्ष निकाला कि 1.कोरपोरेशन और एडिड स्कूलों के मध्य टी मान न्याय, स्वतंत्रता और समानता के आधार पर सार्थक नहीं है। भाईचारे नामक मूल्य पर 'टी' मान 2.78 पाया गया जो हमें यह जानने में सहायता करता है कि दो स्कूलों के मध्य भाईचारे नामक मूल्य में सार्थक अतंर है। 2.कोरपोरेशन और मैट्रीकुलेशन स्कूल के मध्य 'टी' मान 2.97 पाया गया जिससे यह पता चलता है कि भाईचारे नामक मूल्यें के आधार पर दोनों में सार्थक अतंर है। 3. ऐडिड और मैट्रीकुलेशन स्कूलों के मध्य न्याय, स्वतंत्रता और समानता के आधार पर 'टी' मान में कोई सार्थक अतंर नही पाया गया जबकि भाईचारे नामक मूल्य के आधार पर 'टी' मान 4.13 पाया गया जिससे राह पता चलता है कि दो विभिन्न प्रकार के प्रबंधनों में सार्थक अतंर पाया गया। निबांलकर (2014) ने पाया कि वर्तमान विद्यार्थी कल का भविष्य है। अतः आज की शिक्षा राष्ट्र विविधताओं में एकता को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका है। एम0 एस0 खुराड़े (2014) ने पाया कि सामाजिक, आर्थिक और समाज एवं वैधानिक कई प्रकार की समस्याएं मूल्यों की कमी के कारण है। कुल्सुम (2012) ने पाया कि विद्यार्थियो के गृह वातावरण और मूल्यों के बीच सार्थक अंतर है। कुदासिया हफीज (2012) ने पाया कि मूल्य आधारित शिक्षा विभिन्न प्रकार की कट्टरदाताओं जैसे– हिंसा, बेइमानी, अंधविश्वास, धनलोलुप्ता, भ्रष्टाचार, शोषण और नशे की लत आदि से राष्ट्र को बचा सकती है। यादव और चरन (2011) ने पाया कि स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित छात्रा अध्यापकों के मध्य स्वास्थ्य मूल्य पर सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर है। स्वास्थ्य मूल्य एक समान रूप से विकसित नही है। स्ववित्तपोषित छात्रा अध्यापकों की अपेक्षा अनुदानित छात्रा अध्यापकों में स्वास्थ्य मूल्य अधिक विकसित हुए है।

उद्देश्य

1. स्ववितपोषित माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की राष्ट्र प्रेम भावना के स्तर का अध्ययन करना।
2. स्ववितपोषित माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की भाई–चारे की भावना के स्तर का अध्ययन करना।
3. स्ववितपोषित माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की एकता की भावना के स्तर का अध्ययन करना।
4. स्ववितपोषित माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की न्याय और प्रजातांत्रिक भावना के स्तर का अध्ययन करना।
5. स्ववितपोषित माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और क्षेत्रीय समानता की भावना के स्तर का अध्ययन करना।
6. स्ववितपोषित माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की सामाजिकता की भावना के स्तर का अध्ययन करना।
7. स्ववितपोषित माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की साँस्कृतिक विरासत की भावना के स्तर का अध्ययन करना।
8. स्ववितपोषित माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की राष्ट्रीयता की भावना के स्तर का अध्ययन करना।

परिकल्पनायें

1. स्ववितपोषित माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की राष्ट्र प्रेम भावना के स्तर में कोई सार्थक अंतर नही होगा।
2. स्ववितपोषित माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की भाई–चारे की भावना के स्तर में कोई सार्थक अंतर नही होगा।
3. स्ववितपोषित माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की एकता की भावना के स्तर में कोई सार्थक अंतर नही होगा।
4. स्ववितपोषित माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की न्याय और प्रजातांत्रिक भावना के स्तर में कोई सार्थक अंतर नही होगा।
5. स्ववितपोषित माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और क्षेत्रीय समानता की भावना के स्तर में कोई सार्थक अंतर नही होगा।
6. स्ववितपोषित माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की सामाजिकता कह भावना के स्तर में कोई सार्थक अंतर नही होगा।
7. स्ववितपोषित माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की साँस्कृतिक विरासत की भावना के स्तर में कोई सार्थक अंतर नही होगा।
8. स्ववितपोषित माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की राष्ट्रीयता की भावना के स्तर में कोई सार्थक अंतर नही होगा।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध हेतु न्यादर्श के रूप मे हरियाणा राज्य की जनसंख्या मे से सोनीपत जिले के स्ववितपोषित माध्यामिक विद्यालयों के 200 छात्रो का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया।

प्रयुक्त सांख्यकीय तकनीक

ऑकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, क्रान्तिक अनुपात परीक्षण और सह संबधं को सांख्यिकी विधियों के रूप में प्रयुक्त किया गया था।

शोध उपकरण

राष्ट्रीयता की भावना के स्तर के मापन हेतु डा० विनय रनसिंह, डा० ज्योति शिवाल्कर एवं डा० वृंदा जोगलेकर (2011) द्वारा

निर्मित "राष्ट्रीय मूल्यों की भावना" का मानकीकृत उपकरण प्रयोग किया गया।

विश्लेषण व व्याख्या

तालिका संख्या 1: स्ववितपोषित माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की राष्ट्र प्रेम भावना

परिकलित मूल्य	छात्रों की राष्ट्र प्रेम भावना	छात्राओं की राष्ट्र प्रेम भावना
विद्यार्थियों की संख्या	100	100
माध्य	27.29	27.97
मानक विचलन	3.66	34.26
प्रमाप विभ्रम SED	.49	
माध्य अन्तर	.68	
क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (C R test) 'p'value	1.02	

तालिका संख्या 1 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की राष्ट्र प्रेम भावना में छात्रों की राष्ट्र प्रेम भावना तथा छात्राओं की राष्ट्र प्रेम भावना में छात्रों को क्रमश मध्यमान 27.79 तथा 27.19 प्राप्त हुए है, जबकि प्रमाणिक विचलन के मान क्रमशः 4.22 तथा 3.66 प्राप्त हुये हैं। दोनो समूहों के मध्यमानों की तुलना करने पर क्रान्तिक अनुपात (C.R.) का मान 1.02 प्राप्त हुआ है, जो कि सार्थकता के स्तर 0.05 और 0.01 पर सार्थक नहीं है। अतः शोध कार्य से पूर्व बनायी गयी शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है तथा यह कहा जा सकता है कि स्वपोषित माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की राष्ट्र प्रेम भावना एवं छात्राओं की राष्ट्र प्रेम भावना के स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है और दोनों के स्तर एक समान है।

तालिका संख्या 2: स्ववितपोषित माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की भाई–चारे की भावना

परिकलित मूल्य	छात्रों की भाई–चारे की भावना	छात्राओं की भाई–चारे की भावना
विद्यार्थियों की संख्या	100	100
माध्य	17.41	17.60
मानक विचलन	1.85	2.22
प्रमाप विभ्रम SED	.288	
माध्य अन्तर	.19	
क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (C R test) 'p' value	.659	

तालिका संख्या 2 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की भाई–चारे की भावना में छात्रों की भाई–चारे की भावना तथा छात्राओं की भाई–चारे की भावना में छात्रों को क्रमश मध्यमान 17.41 तथा 17.60 प्राप्त हुए है, जबकि प्रमाणिक विचलन के मान क्रमशः 1.85 तथा 2.22 प्राप्त हुये हैं। दोनो समूहों के मध्यमानों की तुलना करने पर क्रान्तिक अनुपात (C.R.) का मान .659 प्राप्त हुआ है, जो कि सार्थकता के स्तर 0.05 और 0.01 पर सार्थक नहीं है। अतः शोध कार्य से पूर्व बनायी गयी शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है तथा यह कहा जा सकता है कि छात्रों की भाई–चारे की भावना एवं छात्राओं की भाई–चारे की भावना के स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है और दोनों के स्तर एक समान है।

तालिका संख्या 3: स्ववितपोषित माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की एकता की भावना

परिकलित मूल्य	छात्रों की एकता की भावना	छात्राओं की एकता की भावना
विद्यार्थियों की संख्या	100	100
माध्य	20.02	20.46
मानक विचलन	3.17	3.86
प्रमाप विभ्रम SED	0.497	
माध्य अन्तर	0.44	
क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (C R test) 'p' value	0.899	

तालिका संख्या 3 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की एकता की भावना में छात्रों की एकता की भावना तथा छात्राओं की एकता की भावना में छात्रों को क्रमश मध्यमान 20.02 तथा 20.46 प्राप्त हुए है, जबकि प्रमाणिक विचलन के मान क्रमशः 3.17 तथा 3.86 प्राप्त हुये हैं। दोनो समूहों के मध्यमानों की तुलना करने पर क्रान्तिक अनुपात (C.R.) का मान 0.899 प्राप्त हुआ है, जो कि सार्थकता के स्तर 0.05 और 0.01 पर सार्थक नहीं है। अतः शोध कार्य से पूर्व बनायी गयी शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है तथा यह कहा जा सकता है कि छात्रों की एकता की भावना एवं छात्राओं की एकता की भावना के स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है और दोनों के स्तर एक समान है।

तालिका संख्या 4: स्ववितपोषित माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की न्याय और प्रजातांत्रिकता की भावना

परिकलित मूल्य	छात्रों की न्याय और प्रजातांत्रिकता की भावना	छात्राओं की न्याय और प्रजातांत्रिकता की भावना
विद्यार्थियों की संख्या	100	100
माध्य	20.02	20.46
मानक विचलन	3.17	3.86
प्रमाप विभ्रम SED	0.497	
माध्य अन्तर	0.44	
क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (C R test) 'p' value	0.885	

तालिका संख्या 4.4 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की न्याय और प्रजातांत्रिकता की भावना में छात्रों की न्याय और प्रजातांत्रिकता की भावना तथा छात्राओं की न्याय और प्रजातांत्रिकता की भावना में छात्रों को क्रमश मध्यमान 20.02 तथा 20.46 प्राप्त हुए है, जबकि प्रमाणिक विचलन के मान क्रमशः 3.17 तथा 3.86 प्राप्त हुये हैं। दोनो समूहों के मध्यमानों की तुलना करने पर क्रान्तिक अनुपात (C.R.) का मान 0.885 प्राप्त हुआ है, जो कि सार्थकता के स्तर 0.05 और 0.01 पर सार्थक नहीं है। अतः शोध कार्य से पूर्व बनायी गयी शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है तथा यह कहा जा सकता है कि छात्रों की न्याय और प्रजातांत्रिकता की भावना एवं छात्राओं की न्याय और प्रजातांत्रिकता की भावना के स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है और दोनों के स्तर एक समान है।

तालिका संख्या 5: स्ववितपोषित माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की समानता की भावना

परिकलित मूल्य	छात्रों की समानता की भावना	छात्राओं की समानता की भावना
विद्यार्थियों की संख्या	100	100
माध्य	26.68	26.42
मानक विचलन	2.65	3.43
प्रमाप विभ्रम SED	.43	
माध्य अन्तर	0.26	
क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (C R test) 'p' Value	0.60	

तालिका संख्या 5 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की समानता की भावना में छात्रों की समानता की भावना तथा छात्राओं की समानता की भावना में छात्रों को क्रमश मध्यमान 26.68 तथा 26. 42 प्राप्त हुए है, जबकि प्रमाणिक विचलन के मान क्रमशः 2.65 तथा 3.43 प्राप्त हुये हैं। दोनो समूहों के मध्यमानों की तुलना करने पर क्रान्तिक अनुपात (C.R.) का मान 0.60 प्राप्त हुआ है, जो कि सार्थकता के स्तर 0.05 और 0.01 पर सार्थक नहीं है। अतः शोध कार्य से पूर्व बनायी गयी शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है तथा यह कहा जा सकता है कि छात्रों की समानता की भावना एवं छात्राओं की समानता की भावना के स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है और दोनों के स्तर एक समान है।

तालिका संख्या 6: स्ववितपोषित माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की सामाजिकता की भावना

परिकलित मूल्य	छात्रों की सामाजिकता की भावना	छात्राओं की सामाजिकताकी भावना
विद्यार्थियों की संख्या	100	100
माध्य	26.68	26.42
मानक विचलन	2.65	3.43
प्रमाप विभ्रम SED	0.43	
माध्य अन्तर	0.26	
क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (C R test) 'p' value	0.60	

तालिका संख्या 6 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की सामाजिकता की भावना में छात्रों की सामाजिकता की भावना तथा छात्राओं की सामाजिकता की भावना में छात्रों को क्रमश मध्यमान 26.68 तथा 26.42 प्राप्त हुए है, जबकि प्रमाणिक विचलन के मान क्रमशः 2.65 तथा 3.43 प्राप्त हुये हैं। दोनो समूहों के मध्यमानों की तुलना करने पर क्रान्तिक अनुपात (C.R.) का मान 0.60 प्राप्त हुआ है, जो कि सार्थकता के स्तर 0.05 और 0.01 पर सार्थक नहीं है। अतः शोध कार्य से पूर्व बनायी गयी शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है तथा यह कहा जा सकता है कि छात्रों की सामाजिकता की भावना एवं छात्राओं की सामाजिकता की भावना के स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है और दोनों के स्तर एक समान है।

तालिका संख्या 7: स्ववितपोषित माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की साँस्कृतिक विरासत की भावना

परिकलित मूल्य	छात्रों की साँस्कृतिक विरासत की भावना	छात्राओं की साँस्कृतिक विरासत की भावना
विद्यार्थियों की संख्या	100	100
माध्य	26.29	27.21
मानक विचलन	5.82	5.67
प्रमाप विभ्रम SED	0.81	
माध्य अन्तर	0.92	
क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (C R test) 'p'value	1.13	

तालिका संख्या 7 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की साँस्कृतिक विरासत की भावना में छात्रों की साँस्कृतिक विरासत की भावना तथा छात्राओं की साँस्कृतिक विरासत की भावना में छात्रों को क्रमश मध्यमान 26.29 तथा 27.21 प्राप्त हुए है, जबकि प्रमाणिक विचलन के मान क्रमशः 5.82 तथा 5.67 प्राप्त हुये हैं। दोनो समूहों के मध्यमानों की तुलना करने पर क्रान्तिक अनुपात (C.R.) का मान 1.13 प्राप्त हुआ है, जो कि सार्थकता के स्तर 0. 05 और 0.01 पर सार्थक नहीं है। अतः शोध कार्य से पूर्व बनायी गयी शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है तथा यह कहा जा सकता है कि छात्रों की साँस्कृतिक विरासत की भावना एवं छात्राओं की साँस्कृतिक विरासत की भावना के स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है और दोनों के स्तर एक समान है।

तालिका संख्या 8: स्ववितपोषित माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की राष्ट्रीयता की भावना

परिकलित मूल्य	छात्रों की राष्ट्रीयता की भावना	छात्राओं की राष्ट्रीयता की भावना
विद्यार्थियों की संख्या	100	100
माध्य	161.65	164.93
मानक विचलन	16.52	19.76
प्रमाप विभ्रम SED	2.58	
माध्य अन्तर	3.28	
क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (C R test) 'p' value	1.27	

तालिका संख्या 8 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की राष्ट्रीयता की भावना में छात्रों की राष्ट्रीयता की भावना तथा छात्राओं की राष्ट्रीयता की भावना में छात्रों को क्रमश मध्यमान 161.65 तथा 164.93 प्राप्त हुए है, जबकि प्रमाणिक विचलन के मान क्रमशः 16.52 तथा 19.76 प्राप्त हुये हैं। दोनो समूहों के मध्यमानों की तुलना करने पर क्रान्तिक अनुपात (C.R.) का मान 1.27 प्राप्त हुआ है, जो कि सार्थकता के स्तर 0.05 और 0.01 पर सार्थक नहीं है। अतः शोध कार्य से पूर्व बनायी गयी शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है तथा यह कहा जा सकता है कि छात्रों की राष्ट्रीयता की भावना एवं छात्राओं की राष्ट्रीयता की भावना के स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है और दोनों के स्तर एक समान है।

शोध निष्कर्ष

माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की राष्ट्र प्रेम, भाई–चारा, एकता, न्याय और प्रजातांत्रिकता, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और क्षेत्रीय समानता, सामाजिकता, साँस्कृतिक विरासत और राष्ट्रीयता की भावना के स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है और दोनों के स्तर एक समान है।

शैक्षिक महत्व

प्रस्तुत की गई शोध प्रक्रिया से भावी शोध की निम्न सम्भावनाये प्रलिक्षित होती है–

1. इस शोध अध्ययन से मूल्यों के विविध उल्लेखित अन्य आयामों के संदर्भ में विस्तृत एवं गहन शोध का मार्ग प्रशस्त होता हैं।
2. मूल्यों से जुड़े विभिन्न प्रत्ययों के शोध का आधार पर छात्रो, प्रशिक्षिणार्थियों के अतिरिक्त अन्य स्तर के शिक्षार्थियों के मूल्यों का आंकलन किया जा सकता है।
3. मूल्यों के संदर्भ में प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर प्रशिक्षिणार्थियों की अभिवृति का आंकलन का तत्सम्बन्धी नवीन शोध प्रस्तुत की जा सकती है।
4. मूल्य; एक व्यापक मनोवैज्ञनिक एवं सामाजिक धारणा है जिसकों कि अनेक तत्व प्रभावित करते हैं। मूल्यों को प्रभावित करने वाले घटकों एवं उनके प्रभावों के संदर्भ में शोध के लिये प्रस्तुत शोध अध्ययन लाभकारी सिद्ध हो सकता है।
5. मूल्यों को अनेक घटकों यथा–सम्बन्धित आर्थिक स्तर बालकों विधि श्रेणियों (प्रतिभावान, पिछड़े, विकलांग.....) कामकाजी/घरेलू महिलाओं विविध व्यक्तित्व को व्यक्तियों..... इत्यादि अनेक प्रकार कि विषय हो सकते है, से सह सम्बन्धित नवीन खोज की जा सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. एको–जीनअदा और ओजोन, जेम्स फॉबे। इफेक्टस ऑफ नेशनल इनसिक्योरिटी ऑन इन्टर पर्सनल रिलेशनशिप अमंग थूयस ऑफ बेन्यू स्टेट नाईजिरिया, इंडियन जनरल ऑफ अप्लाईड रिसर्च। 2014; 4(8).
2. चन्द्र. आर. के. माहनसुदंरम और सिंगरावेलु। स्टडी ऑफ नेशनल वेल्यूज अवेयरनेस इन स्कूल्स, परिपेक्ष्य, इंडियन जनरल ऑफ रिसर्च। 2013; 2(8).
3. धिंगरा, राखी गिरीराज। शांति शिक्षा के प्रति विभिन्न महाविद्यालयों के अध्यापकों की जागरूकता और दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन । इन्टरनैशनल जनरल ऑफ हिन्दी रिसर्च। ISSN 2455-2232, 2016; 2(3):01-09.
4. गौतम, अखिलेश कुमार। ने ''किशोरावस्था और राष्ट्रीयता'', भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एंव शोध, ए रेफर्ड जनरल। ISSN 2321-9726, 2017; 8(1):1-14.
5. सजीथा. जे.। भूमण्डलीकरण से राष्ट्रीयकरण, इन्टरनैशनल जनरल ऑफ हिन्दी रिसर्च। ISSN 2455-2232, 2017; 3(4):51-52.
6. श्रीवास्तव, संदीप कुमार और गुप्ता, मोनिका। रोल ऑफ मीडिया इन नेशनल इंटीग्रशन इन इंडिया ऑनलाईन इंटरनेशनल इंटरडिसीप्लीनरी रीसर्च जनरल। ISSN 2449-9558, 2015; 5.
7. शर्मा चारू। चिल्ड्रेन अडंरस्टैंडिग ऑफ 'नेशन' थियोरिटिकल पर्सपैक्टिवस, जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन। 2014; वाल्यूम नं. 2 आई. एस. एस. एन 09725658 एन सी ई आर टी. ।
8. सेनागुप्ता, सुष्मिता। नेशनेलिटी क्वेश्च एडं नेशनल जी. एस. टी. एफ. इन्टरनैशनल जनरल ऑफ ला एडं सोशल सांइसेज (जे. एल. एस. एस.) 2013; 3(1).
9. शर्मा। शिक्षा अनुसन्धान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, मेरठः आर लाल बुक डिपो, 2011.
10. यादव, चारू एवं शास्त्री, रामअवध। नैतिक जीवन मूल्य, इन्टरनैशनल जनरल ऑफ हिन्दी रिसर्च। ISSN 2455-2232, 2016; 2(5):65-67.